हिन्दी विभाग

हिन्दी विभाग की ओर से इस शैक्षणिक वर्ष मे अनेक कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। सबसे पहले कविसमेंलन ने कार्यक्रम की शुरूवात की गयी। इस वर्ष हिन्दी विभाग ने प्रथम सत्र की शुरूवात में ही २९ जून को हिन्दी कविताओं में छंद योजना विषय पर कार्यक्रम का आायेजन कर हिन्दी साहित्य मंडल का उद्घाटन किया। इस कार्यक्रम की यह विशेषता रही कि कार्यक्रम में एक साथ पाल भसीन, राजेंन्द्र गौतम एवं चित्रकार गजलकार विज्ञान व्रत जैसे कवियों ने मंच की शोभा बढ़ाते हुए छंद आयोजन की चर्चा के साथ अपनी चुनिंदा कविताओं के प्रस्तुतीकरण से विभाग को गौरवान्वित कर दिया।

२४ सितंबर के दिन तृतीय वर्ष के विदयार्थियों को नेशनल पार्क, कान्हेरी गुफाएँ, गोराई बीच तथा पगोड़ा जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक स्थलों की भेंट करावायी गई। इसी विषय को आगे बढ़ाते हुए भारतीय संस्कृति एवं विरासत से अवगत कराते हुए प्राचार्या जी ने तृतीय वर्ष कला के सभी छात्रों के साथ सामूहिक रूप में चर्चा की।

७ जनवरी को विभाग द्वारा प्रेमचंद जी के 'कफन' और 'इदगॉह' जैसे चुनिंदा एवं छात्राप्रिय कहानियों पर नयी फिल्म का प्रदर्शन कर कहानी के एक विधा से दूसरी विधा मे परिवर्तित रूप की चर्चा की गई। तीनों वर्ष के विद्यार्थियो को चर्चा मे सम्मिलित किया गया। दोनो कहानियों का फिल्म प्रदर्शन उपप्राचार्य देशपांडै मॅडम एवं शिंदे सर की उपस्थित में प्रारंभ किया गया।

फरवरी माह के दूसरे सप्ताह में तृतीय वर्ष के छात्रों को प्रश्नपत्र नौ 'जनसंचार माध्य' के अंतर्गत पूणे के एफ टी आय फिल्म संस्था की भेंट करायी गयी।

छात्रो के लिए आयोजित किए गए कार्यक्रमों के साथ विभागीय प्राध्यापकों ने भी रिफ्रेशर कोर्स पूर्ण किये। ७ नंवबर से २६ नवंबर एक शिमला विश्वविद्यालय में प्रा. अनिल ढवले द्वारे तथा १४ फरवरी से ५ मार्च कुमाऊ विश्वविद्यालय, नैनीताल में प्रा. जयश्री सिंह द्वारा रिफ्रेशर कोर्स पूरा किया गया। साथ ही विभाग के दोनों प्राध्यापकों ने पेण महाविद्यालय तथा एस.आय.इ.एस. महाविद्यालयों द्वारा आयोजित राष्ट्रीय एवं अंतराष्ट्रीय संगोष्ठियों में अपनाशोधप्रपत्र प्रस्तुत किया।

विभाग की सहयोगी प्राध्यापिका कु. जयश्री सिंह ने सितंबर में 'सुरेन्द्र वर्मा के नाटकों का अनुशीलन' विषय पर मुंबई विश्वविद्यालय के असोसिएट प्रोफेसर डॉ. विष्णू सरवदे के निर्देशन में अपना शोध प्रबंध प्रस्तुत किया। जिस पर उन्हें २८ जनवरी को मुंबई विश्वविद्यालय द्वारा पी.एच.डी. कि उपाधि प्रदान की गई। जून माह में उन्हें हिन्दी फेमिना पत्रिका द्वारा 'दुय्यम सुख्खम' उपन्यास पर सामुहिक चर्चा के लिए आमंत्रित किया गया था। साथ ही ७ सितंबर को वे बिर्ला महाविद्यालय मे प्रश्न पत्र ४ पर अतिथि

व्याख्यान के लिए आमंत्रित की गई। इसी वर्ष उन्होंने तकनीकी ज्ञानार्जन हेतु पॉलिटेनिक संस्थान में अपना एम.एस.सी.आय.टी. का कोर्स भी पूर्ण किया।

♦ ऐरेरोल्ली स्थित डी.ए.व्ही.विद्यालय में 'राष्ट्रीय स्तर पर आयोजित महात्मा हंसराज झोन्नल प्रतियोगित के लिए परीक्षक के रूप में आमंत्रित

♦ शिमला स्थित अकादमीक स्टाफ कालेज्ज व्दारा आयोजित पुनःश्चर्या पठयक्रम 'अ' श्रेणी के साथ पूर्ण किया

♦ मुंबई विश्वविद्यालय के हिन्दी विभाग व्दारा आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "नाटककार विष्णु प्रभाकर के नाटकों में जनमानस का संस्कार" इस विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत

♦ महाराष्ट्र हिन्दी साहित्य अकादमी एवं लांज्जा महाविद्यालय के संयुक्त त्वावधान में आयोजित राष्ट्रीय संगोष्ठी में "हिन्दी के विकास में संस्थाओं का योगदान" इस विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत

♦ महाराष्ट्र हिन्दी साहित्य अकादमी एवं के..जे.. सोम्मय्या महाविद्यालय के संयुक्त त्वावधान में राष्ट्रीय संगोष्ठी में "प्रा. दामोदेदर मोरेरे की कविता में आंबेडेडकरी चेतना 'नीले शब्दों की छाया में' के संदर्भ में"" इस विषय पर प्रपत्र प्रस्तुत

♦ ठाणे स्थित डी. ए. व्ही. अंतर्राष्ट्रीय स्कूल में तीन भाषाओं के विषय विशेषज्ञ के रूप में आमंत्रित

♦ चार भाषाओं में भाषण प्रतियोगित का आयोजन पटकर वर्दे महाविद्यालय में किया गया जिसमें परीक्षक के रूप में आमंत्रित

♦ धूलूले स्थित विद्यावर्धिनी महाविद्यालय एवं महाराष्ट्र हिन्दी साहित्य अकादमी के संयुक्त त्वावधान में आयोजित अंतर्राष्ट्रीय संगोष्ठी में "शरणकुमार लिंबाले के उपन्यास 'हिन्दू" का हिन्दी में अनुवाद एक अध्ययन" इस विषय पर शोधपत्र प्रस्तुत

प्रा. अनिल ढवळे
विभाग प्रमुख